कुमारी चम्पा।
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

घनानन्द (सप्रसंग व्याख्या)

"रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारियै।
त्यों इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै॥
एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्यौ सुजान सकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै॥"

प्रसंग :- प्रस्तुत सवैया घनानन्द द्वारा रचित 'सुजान हित' से ली गयी है। यह कविता सुजान के प्रेम विरह में रचित की गयी है। इसमें कवि ने अपनी प्रेयसी सुजान के अपूर्व सौन्दर्य की विलक्षणता का वर्णन किया है।

व्याख्या :- घनानन्द कहते हैं कि हे सुजान! तुम्हारा रूप सौन्दर्य अद्भुत है। तुम्हारी छवि की रीति अनोखी है। इसको जितना अधिक और जितनी बार देखा जाय उसमें एक नवीनता की अनुभूति होती है। तुम्हारा रूप सौन्दर्य इतना विलक्षण है कि उसमें हर बार एक नयापन सा लगता है। प्रायः किसी वस्तु को बार-बार देखने में कोई उत्सुकता नहीं होती, परन्तु तुम्हारा रूप सौन्दर्य इतना विलक्षण है कि उसे बार बार देखने को मन करता है। भाव यह है कि सुजान के रूप में हर पल बदलाव के कारण नवीनता बनी रहती है। कवि कहता है कि सुजान का रूप जैसा अद्भुत है वैसी ही विचित्र दशा मेरे आँखों की भी है। मैं यह बात तुम्हारी सपथ खाकर कहता हूँ कि मेरी इन आँखों को तुम्हारे अतिरिक्त और कहीं तृप्ति नहीं होती। इन नेत्रों को एक बार देखने पर सन्तुष्ट हो जाना चाहिए, परन्तु न जाने इन आँखों को क्या आदत पड़ गयी है कि वे तुम्हें बार-बार देखने पर भी संतुष्ट और तृप्त नहीं होती। कवि कहता है मेरे पास तो केवल एक ही हृदय था उसे भी मैंने तुम्हारे रूप सौन्दर्य पर न्योछावर कर दिया। अब मैं चिंता

Date

और संकोच से मुक्त हो गया हूँ, अर्थात मैंने अपना दिल सुजान को अर्पित कर दिया है। अब तो वही मेरे लोक लाज की रक्षा करेगी और मेरे प्राणों की चिंता करेगी।
भाव यह है कि मेरे द्वारा तुम्हें देखे जाने पर लोग कहीं यह न समझ लें कि तुमने मुझे स्वयं को देखने की अनुमति दी है। तुम्हारे मन में मेरे प्रति सहानुभूति है। तुम्हें इस बात का संकोच होगा कि लोग क्या कहेंगे। मुझे इस बात की सोच है कि भले ही मैं तुम्हें कितना देखूँ, तुम्हारे रूप पर मेरी आँखें टिक ही नहीं पातीं। तुम्हें देखे बिना मेरे प्राण नहीं रहते। इस सोच का निवारण तुम्हीं करो। हे सुजान! मेरी आँखें तुम पर रीझ गयी हैं और रोकने से भी नहीं रुकतीं। मेरी आँखें हर समय तुम्हारे रूप सौन्दर्य के विरह में जलती रहती हैं। मैं तो इस पागल उमंग के हाथों हार चुका हूँ।

विशेष :- ① इसमें प्रेयसी के रूप सौन्दर्य की नवीनता का वर्णन किया गया है।
② इसमें सवैया छंद है।
③ इसमें अनुप्रास, उदाहरण तथा विशेषोक्ति अलंकार हैं।
④ भाषा माधुर्यपूर्ण, मुहावरेदार तथा प्रवाहमय है।
'हाथाने हारियै' मुहावरा है।